eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 11, November 2023

# लैंगिक समानता एवं ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भूमिका

**[1]डॉ अपर्णा शुक्ला**
[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, गृह विज्ञान विभाग, दयानंद गर्ल्स पी. जी. कॉलेज, कानपुर।

Received: 25 September 2023 Accepted and Reviewed: 30 September 2023, Published : 01 Nov 2023

## Abstract

आज के इस अर्थ प्रधान युग में महिला एवं पुरुष दोनों ही अर्थव्यवस्था की उन्नति के लिए भरसक प्रयास करते हैं परंतु प्राचीन काल से लेकर आज तक समाज की मानसिकता कई स्तरों में आज भी कहीं ना कहीं असमानता एवं भेदभाव की दृष्टिकोण से निहित है। महिलाओं को कई काम करने से हतोत्साहित किया जाता है। उन्हें घर की देखभाल करने वाली ही समझा जाता है लैंगिक असमानता हर किसी को प्रभावित करती है, चाहे वह बच्चे हो, महिलाएं हो, ट्रांसजेंडर हों या पुरुष भी। लैंगिक समानता एक मानवधिकार है लेकिन विभिन्न अवसरों तक पहुंच के साथ–साथ महिलाओं और पुरुषों के लिए निर्णय लेने की शक्ति में एक निश्चित अंतर प्रतीत होता है। महिला सशक्तिकरण लैंगिक समानता लाने का एक महत्वपूर्ण पहलू है। महिलाओं को समान अवसर देने और उन्हें अधिकारों से समान हिस्सेदारी की गारंटी देने से न केवल लैंगिक समानता हासिल करने में मदद मिलती है, बल्कि विकास लक्ष्यों की एक विस्तृत श्रृंखला भी हासिल होती है।

शब्द संक्षेप– महिला सशक्तिकरण, लैंगिक समानता, ग्रामीण अर्थव्यवस्था एवं महिलाओं की भूमिका।

## Introduction

"थर्ड बिलियन इंडेक्स शोघपत्रिका 2020" – अगले एक दशक में दुनिया के कुल कार्य बल में एक अरब महिलाएं शामिल होंगी लेकिन आर्थिक सशक्तिकरण तथा पेशेवर सफलता के मामले में उनके सामने काफी चुनौतियां भी आएँगी।

इनमें ऐसी महिलाओं का प्रतिनिधित्व करता है जो वैश्विक अर्थव्यवस्था में उपभोक्ता, उत्पादक कर्मचारी और उद्यमियों का स्थान ग्रहण कर पहली बार अर्थव्यवस्था की मुख्य धारा में शामिल होंगी। थर्ड बिलियन इंडेक्स रिपोर्ट में कहा गया है कि यदि महिलाओं के रोजगार का दर पुरुषों की रोजगार दर के समान हो तो भारत के सफल घरेलू उत्पादन में 27% की वृद्धि हो सकती है।

महिलाओं और पुरुषों की रोजगार दर के समानता लाकर संयुक्त अरब अमेरिका और मिश्र जैसे विकासशील अर्थव्यवस्थाएं में अपने सकल घरेलू उत्पाद में 42% और 34% की वृद्धि कर सकती है।

अर्थव्यवस्था के दरवाजे पर खड़ी भारतीय महिला की स्थिति पर टिप्पणी करते हुए एक रिपोर्ट में कहा गया है, कि महिलाओं को पर्याप्त स्वास्थ्य सुविधा, सामाजिक सेवा, परिवहन तथा गुणवत्ता पूर्णशिक्षा प्राप्त नहीं है यदि महिलाओं को आर्थिक रूप से मजबूत बनाना चाहते हैं तो इन बुनियादी समस्याओं का समाधान करना चाहिए।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 11, November 2023

## उद्देश्य –

1. लैंगिक समानता पर प्रकाश डालते हुए ग्रामीण महिलाओं के व्यक्तिगत, पारिवारिक जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन।
2. ग्रामीण महिलाओं के ऑर्थोपार्जन के साधनों की जानकारी प्राप्त करना।
3. विभिन्न समस्याएं जो ऑर्थोपार्जन से संबंधित है उनसे अवगत होना।
4. लैंगिक समानता से संबंधित विभिन्न जानकारी का अध्ययन करना।

## शोध विधि –

प्रस्तुत शोध हेतु उन्नाव जिले के सिकंदरपूर्ण करण के हडहा गांव को लिया गया है,इसमें से 50 उत्तरदाताओं को याद्वच्छिक विधि से चयन किया गया है। आंकड़ों के संकलन के लिए प्रश्नावली ,अनुसूची विधि का चयन किया गया है आंकड़ों के संकलन के लिए उचित उपकरण एवं तकनीकी जैसे – माध्य ,मध्यमान, माधियका , प्रतिशत उचित सारणी का प्रयोग किया गया है।

**आंकड़ों का विश्लेषण – सारणी संख्या 1**

**उत्तरदाताओं की आयु शैक्षिक स्थिति का स्तर**

| क्रम सं० | विवरण | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | 18 – 25 | 8 | 8 |
| 2 | 26 – 33 | 17 | 17 |
| 3 | 34 – 41 | 40 | 40 |
| 4 | 42 – 49 | 24 | 24 |
| 5 | 50 – 57 | 11 | 11 |
| कुलयोग – | | 50 | 50 |

उपर्युक्त सारणी से प्राप्त होता है कि 40 फ़ीसदी महिलाएं जो ऑर्थोपार्जन कर रही हैं उनकी आयु 34 से 41 वर्ष है 24% जो महिलाएं हैं वह 42 से 49 वर्ष की है सबसे कम जो महिलाएं ऑर्थोपार्जन कर रही है वह 8% है जो 18 से 25 वर्ष की हैं ।

**सारणी संख्या २**

**शैक्षिक स्तर**

| क्रम सं० | विवरण | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | अशिक्षित | 20 | 20 |
| 2 | प्राथमिक | 30 | 30 |
| 3 | माध्यमिक | 17 | 17 |

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 11, November 2023

| | | | |
|---|---|---|---|
| 4 | मैट्रिक | 15 | 15 |
| 5 | इंटरमीडिएट | 10 | 10 |
| 6 | स्नातक | 5 | 5 |
| 7 | परास्नातक | 2 | 2 |
| 8 | अन्य | 0 | 0 |
| | **कुलयोग –** | 50 | 50 |

उपरोक्त में से यह निकल कर आया है कि 30% महिलाएं प्राथमिक स्तर की हैं एवं 2% महिलाएं ही ऐसी हैं जो परास्नातक तक पढ़ी है।

**सारणी संख्या ३**

**उत्तरदाता के मुख्य व्यवसाय पर आधारित विभाजन**

| क्रम सं० | विवरण | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | कृषि | 30 | 30 |
| 2 | कुटीर उद्योग | 22 | 22 |
| 3 | लघु उद्योग | 25 | 25 |
| 4 | मजदूरी | 20 | 20 |
| 5 | अन्य व्यवसाय | 3 | 3 |
| | **कुलयोग –** | 50 | 50 |

उपर्युक्त सारणी में 30% ऑर्थोपार्जन करने वाली ग्रामीण महिलाओं का मुख्य व्यवसाय कृषि है 22% महिलाओं का कुटीर उद्योग 25% महिलाओं का उद्योग लघु उद्योग 20% महिलायें मजदूर हैं तथा 3% अन्य व्यवसाय से जुड़ी है।

## निष्कर्ष –

ग्रामीण अर्थव्यवस्था को हर आयु वर्ग की महिला किसी न किसी प्रकार से लाभान्वित कर रही है। चाहे शिक्षित हो या अशिक्षित, युवा हो या प्रौढ, खेती में हो या किसी अन्य ग्रामीण व्यवसाय में हर क्षेत्र में कार्य कर रही हैं। यदि उन्हें और अधिक अवसर एवं सुविधाएं प्रदान की जाएं तो वे ग्रामीण अर्थव्यवस्था में और अधिक भूमिका निभा सकती हैं।

## सुझाव –

1– पुरुषों के साथ महिलाओं को भी राजनीति, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और नागरिक क्षेत्र में मानव अधिकारों का वैधानिक और वास्तविक उपभोग के समान अवसर प्रदान किए जाएं ।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 11, November 2023

2– देश के सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक जीवन में सहयोग तथा निर्णय लेने की प्रक्रिया में महिलाओं की समान भागीदारी होनी चाहिए

3– महिलाओं के विरुद्ध भेदभाव के सभी रूपों के उन्मूलन के उद्देश्य से वैधानिक व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने की आवश्यकता ।

4– पुरुषों और महिलाओं की सक्रिय भागीदारी से व्यवहार और समुदाय प्रथाओं में परिवर्तन ।

5– विकास और प्रक्रिया में लिंग दृष्टिकोण को मुख्य धारा में लाना ।

6– महिलाओं और बालिकाओं के विरुद्ध भेदभाव तथा सभी प्रकार की हिंसा का उन्मूलन।

सकारात्मक आर्थिक और सामाजिक नीतियों के माध्यम से महिलाओं के विकास के लिए ऐसा वातावरण बनाना जो उन्हें अपनी पूर्व क्षमता का अनुभव कराने के लिए सक्षम हो।

## संदर्भ ग्रंथ सूची–


- भारत सरकार रिपोर्ट, आर्थिक सर्वेक्षण प्रकाशन वित्त मंत्रालय – 2020, 2021
- श्रीवास्तव मयंक ''महिला सशक्तिकरण सामाजिक बदलाव के लिए'', कुरुक्षेत्र (2011) पृ०–16
- गौतम नीरज कुमार ''ग्रामीण महिला सशक्तिकरण का बदलता स्वरूप'', कुरुक्षेत्र अगस्त 2013